समाजशास्त्र की प्रकृति
(Nature of Sociology)

समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, प्राकृतिक विज्ञान नहीं - समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है। क्योंकि इसकी विषय-वस्तु मौलिक रूप से सामाजिक है अर्थात् इसमें समाज, सामाजिक घटनाओं सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक संबंधों तथा अन्य सामाजिक पहलुओं एवं तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। जब हम किसी विषय की प्रकृति की चर्चा करते है तो यह देखते है कि वह विषय विज्ञान है या नहीं। समाजशास्त्र के विज्ञान होने के समर्थन में जॉनसन कहते है कि समाजशास्त्र निर्विवाद रूप से विज्ञान है। क्योंकि यह अपने अध्ययन के द्वारा सत्यापित की जाने योग्य सामाजिक नियमों का प्रतिपादन करने में सफल हुआ है।

विज्ञान का अर्थ :— विज्ञान अपने आप में कोई

विषय-सामग्री न होकर वैज्ञानिक पद्धति से प्राप्त किया गया व्यवस्थित ज्ञान है। आगस्त कॉम्ट (August Comte) ने विज्ञान के लिए तथ्य परख होना भी अनिवार्य माना है। स्टुअर्ट चेज (Stuart Chase) के अनुसार विज्ञान का संबंध पद्धति से है न कि विषय-सामग्री से।

वैज्ञानिक पद्धति भावात्मक या तार्किक चिंतन पर आधारित न होकर अनुभव, परीक्षण, प्रयोग की एक व्यवस्थित कार्य प्रणाली पर आधारित होती है।

वैज्ञानिक पद्धति की विशेषता

1. सत्यापनियता
2. निश्चयात्मकता
3. वस्तु परखता
4. कार्य कारण संबंध की विवेचना
5. सामान्यता
6. पूर्वानुमान या भविष्यवाणी की क्षमता।

समाजशास्त्र को विज्ञान मानने के आधार निम्नलिखित है :—

1. **समाजशास्त्रीय ज्ञान का आधार वैज्ञानिक पद्धति :—**

समाजशास्त्र में तथ्यों के संकलन के लिए विभिन्न वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे — अवलोकन पद्धति, अनुसूची साक्षात्कार, सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति आदि।

2. **समाजशास्त्र में क्या है का वर्णन :—**

समाजशास्त्र इस बात पर विचार नहीं करता कि क्या अच्छा है, क्या बुरा है या क्या होना चाहिए, बल्कि घटना जिस रूप में

है, उसी रूप में उसका चित्रण करता है।

3. **समाजशास्त्र में कार्य - कारण संबंधों की विवेचना :—**

प्रत्येक सामाजिक घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है, जिसका पता लगाना समाजशास्त्री का दायित्व है। कार्ल मार्क्स का वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त एवं दुर्खीम का आत्महत्या का सिद्धान्त कार्य कारण संबंध को स्पष्ट करता है।

4. **समाजशास्त्र में तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण :—**

असंबद्ध आँकड़ों या तथ्यों के आधार पर कोई वैज्ञानिक निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। समाजशास्त्र में प्राप्त तथ्यों को समानता के आधार पर विभिन्न वर्गों में बाँटा जाता है, जिसे वर्गीकरण कहते हैं। वैज्ञानिक निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए इन तथ्यों का विश्लेषण किया जाता है।

5. **समाजशास्त्र में पूर्वानुमान की क्षमता :—**

विज्ञान की एक कसौटी पूर्वानुमान करने की क्षमता का होना है, इसका तात्पर्य वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से सामान्यीकरण इतना निश्चित रूप से हो जाए कि वर्तमान में प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर भविष्य की घटनाओं के बारे में अनुमान लगाया जा सके। ऐसा होने पर उस पर नियंत्रण की संभावना बढ़ जाती है।

समाजशास्त्र की प्रकृति के अन्तर्गत कुछ विद्वान इसे विशुद्ध (Pure) विज्ञान मानते हैं, जबकि अन्य विद्वान इसकी संभावना पर प्रश्न चिन्ह लगा देते हैं। इसका कारण यह है कि प्राकृतिक विज्ञान में केवल उन्हीं सामाजिक प्रघटनाओं

का अध्ययन किया जाता है जिसका स्पष्ट रूप से निरीक्षण संभव है अर्थात घटनाएं वस्तुनिष्ठ हो जबकि सामाजिक घटनाओं में वस्तुनिष्ठता के साथ व्यक्तिनिष्ठता (मानवीय पक्ष - जैसे भावनाएं एवं संवेदनाएं) भी निहित होती है।

राबर्ट बीरस्टीड :—

राबर्ट बीरस्टीड का कहना है कि समाजशास्त्र की वास्तविक प्रकृति वैज्ञानिक है।

उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट होता है कि समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है। क्योंकि इसकी विषयवस्तु मौलिक रूप से सामाजिक है. अर्थात इनमें समाज, सामाजिक घटनाओं, सामाजिक प्रक्रियाओं... सामाजिक संबंधों तथा अन्य सामाजिक पहलुओं एवं तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्र वास्तविक घटनाओं का अध्ययन, जिस रूप में वे विद्यमान है, करता है। अवलोकन पद्धति द्वारा आंकड़ों के संकलन तथा कार्य-कारण संबंधो के अध्ययन पर बल देने के कारण भी यह एक वास्तविक विज्ञान है। समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है। यह एक विषय है जिसमें मानव समाज के विभिन्न स्तरों, उसकी विविध संरचनाओं, प्रक्रियाओं इत्यादि का वस्तुनिष्ठ एवं क्रमबद्ध रूप से अध्ययन किया जाता है, ये अन्य विषय के तरह ही एक स्वतन्त्र विषय है। इस प्रकार, जब हम समाजशास्त्र को समाज का विज्ञान कहते है तो हमारा तात्पर्य ऐसे विषय से है जो समाज तथा इसके विभिन्न पहलुओं का क्रमबद्ध अध्ययन करता है।

Smita Kumari